विशिष्ट गुण प्रेम...



प्रेम दिखावे का मोहताज नहीं

प्रेम मनुष्य के जीवन की ऐसी भावना है, जिसे शब्दों में पूरी तरह बाँधा नहीं जा सकता। प्रेम, मंदिर के दीये की तरह है - जलता है तो प्रकाश अपने आप फैलता है, वह चिल्लाता नहीं है। जो सच्चा है, उसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती, और जिसे सिद्ध करना पड़े, वह सच्चा नहीं होता। प्रेम तो वह है - पिता बिना कहे बेटे के जूते देखकर समझ जाता है कि घिस गए हैं, नए लाने हैं। माँ अपने बेटे के माथे पर हाथ रखकर बुखार नाप लेती है। दुखी मन देखकर, मित्र बिना कुछ पूछे, बस पास बैठ जाता है।

प्रेम की पहचान पहले हृदय की धड़कन से होती थी, अब मोबाइल के स्टेटस से। पहले प्रेम आँखों में होता था, आज प्रेम हृदय से निकलकर जुबां पर आ गया है। प्रेम अब प्रदर्शन का विषय बन गया है, प्रेम को अब दिखाना और जताना पड़ता है। प्रेम का प्रदर्शन दूसरों को दिखाई देता है, जबकि वास्तविक प्रेम उस व्यक्ति को महसूस होता है, जिसके साथ वह निभाया जाता है।

प्रेम और उसके प्रदर्शन का अंतर समझने के लिए उनके उद्देश्य पर ध्यान देना चाहिए। प्रदर्शन दूसरों की नजर और प्रशंसा के लिए होता है; प्रेम अपनेपन और विश्वास के लिए। प्रेम का पहला लक्षण है- गोपनीयता। ये ढाई आखर कभी मंच पर पढ़कर नहीं सुनाए जाते। ये तो भीतर घुटते हैं, भीतर ही पकते हैं। राम और भरत का प्रेम, कृष्ण और सुदामा का प्रेम, संत कबीर, मीराबाई, राधा-कृष्ण तथा शिव-पार्वती आदि के प्रेम ने ढिंढोरा नहीं पीटा, प्रेम को महसूस किया।

माँ बच्चे की हर परेशानी बिना कहे समझ लेती है। पिता वर्षों तक परिवार के लिए परिश्रम करते हैं, पर अपने त्याग का हिसाब नहीं रखते। कोई मित्र कठिन समय में बिना बुलाए पहुँच जाता है, और जीवनसाथी असफलता के बाद भी साथ नहीं छोड़ता। इन छोटे, मौन कार्यों में प्रेम का वह रूप दिखाई देता है, जिसे किसी सार्वजनिक घोषणा की आवश्यकता नहीं होती।

इसलिए प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण शब्द नहीं, व्यवहार है। किसी की चिंता करना, उसके लिए समय निकालना, उसकी कमजोरियों को समझना, गलती पर सुधार का अवसर देना और विपरीत परिस्थितियों में उसका हाथ थामे रहना—ये प्रेम के वास्तविक प्रमाण हैं। इन्हें दिखाने के लिए मंच नहीं, निभाने के लिए संवेदना चाहिए।

सच्चा प्रेम अधिकार जमाना भी नहीं है। प्रेम का अर्थ किसी की स्वतंत्रता छीनना या उसके जीवन को नियंत्रित करना नहीं, बल्कि उसकी गरिमा और निर्णयों का सम्मान करना है। उसमें अपनापन होता है, स्वामित्व नहीं; चिंता होती है, अनावश्यक हस्तक्षेप नहीं। आज संबंधों में औपचारिकता और प्रदर्शन बढ़ रहे हैं, इसलिए प्रेम की सादगी को बचाना और भी जरूरी है।

प्रेम की परीक्षा सुख में नहीं, कठिन समय में होती है। उत्सव के क्षणों में साथ खड़े होने वाले अनेक होते हैं, लेकिन परेशानी में बिना किसी दिखावे के साथ निभाने वाले कम। यही मौन साथ रिश्तों की असली पूंजी है। प्रेम की तीन पहचानें जो प्रदर्शन से परे हैं। पहली - जहाँ सच्चा प्रेम होता है, वहाँ शब्द कम हो जाते हैं।

पति-पत्नी जो वर्षों साथ रहे हैं, वे बिना बोले समझ जाते हैं। माँ-बेटे के बीच शब्दों की आवश्यकता नहीं पड़ती। दूसरी - प्रेम भीड़ में नहीं पनपता। भीड़ में तो राजनीति पनपती है। प्रेम तो एकांत माँगता है। मीरा ने कृष्ण को महल में नहीं, एकांत कोठरी में पाया। तीसरी - प्रदर्शन में पाने की इच्छा है - वाहवाही पाऊँ, प्रेम में खोने की तैयारी है। अपना समय खोना, अपना अहंकार खोना, अपनी सुविधा खोना।

प्रेम जीवन का सबसे गहरा, सहज और पवित्र भाव है। आज का प्रेम क्यों टूट रहा है? क्योंकि हम प्रेम को जी नहीं रहे, उसे दिखा रहे हैं। प्रेम कोई नुमाइश नहीं, बल्कि दो हृदयों के बीच की एक मौन प्रार्थना है। यह मिट्टी के भीतर दबी उस जड़ की तरह है, जो बाहर दिखती नहीं, लेकिन पूरे पेड़ को जीवन और मजबूती देती है। जिस दिन हम प्रेम को दूसरों को दिखाने की जिद से मुक्त कर देंगे, उसी दिन हम इसकी वास्तविक मिठास और गहराई को महसूस कर पाएँगे। याद रखिए - इत्र की शीशी खुली रहे तो महक उड़ जाती है। उसे बंद रखो तो वर्षों महकती है। प्रेम भी इत्र की तरह है। उसे जितना छिपाकर रखेंगे, उतना ही महकेगा। यही प्रेम की गरिमा है, यही उसकी मर्यादा है।



अमर सिंह राय
नौगाँव, मध्य प्रदेश

ब्रज बसुधा नें जगत कूँ, दियौ गेंद कौ खेल

हमारी संस्कृति में एक समै ऐसौ हू हतो, बिदेसन में बसिबौ,छोटी बात मानी जांती। समै के रचनाकारन्नैं कहीं है, 'रोटी के हेतु लोग देस हों विदेस जाँत। 'कबऊ - कबऊ सुनिबे में आबै,विदेसन में,भौतु सी जरूरी सेबा ऐसी हैं, जिनमें भारत वर्ष की प्रतिभान्नैं ई बिनकी नौंक ऊँची करि राखी है इलाज की बात होइ चाँय कम्प्यूटर की, हमारे लोग सदा-सदा कूँ लौटिकें अपने देस में आइ जांइ तौ, बिदेसन कौ तौ देवालौ सौ निकरि जाइगौ।



भारत बासी अपनी बुद्धि के बल पै,बिनकी तकनीक कूँ गुणवत्ता की घुटी पिबाइकें,बिन देसन की गिनती धनी-मानी देसन में तौ कराइ ही रहे हैं, इतनों ही नाँय,जाके सँग-सँग बिन्नैं काम सिखाइ कें, बिनकें सुनहरे भबिष्य कौ इतिहास लिखि रहे हैं। जि गुरु की भूमिका नाँय तौ और कहा है ? दुनिया की नकली चमक -दमक देखिकें, हम चकाचौंध है गये है, अपने आप कूँ भूलि कें बैठे हैं। शांति निकेतन और नालंदा जैसै, विश्वविद्यालयन में आधी सी दुनिया के विद्यार्थी, पढ़ि-लिखि कें अपने जीवन कूँ सार्थक बनाइबे लालायित रहते।

सृष्टि के बिकास की कहानी में तरै-तरै की असंख्यन खोज भईं, अब तक दुनिया में जितनी हूं खोज भईं ,बिनमे आत्मा-परमात्मा की शोध सर्वोपरि रही। परमात्मा आत्मा के रूप में हमारे जा नासवान सरीर में ही विद्यमान है,वैदिक कालीन साधक ऋषीन की जि घोषना,जगत में गुरु गद्दी की दावेदार हैगयी। पाँच हजार वर्ष पहलें,लिखी गई भगवान श्री कृष्ण की गीता ने तौ चमत्कार ही कर दियौ, गीता जी कौ पाठ करिकें दुनिया भरि के जिज्ञासु हमारे जोग साधकन के सरनागत हैबे लगे।



बड़ी-बड़ी बात ही नाँय,जा दुनिया नें सब दुनिया दारी हमते ही सीखी है।रहबौ-सहबौ, खान-पान, खेल-कूद,बिकास के नाम पै हवा में उड़िबे बारे लोग आज जा बात पै जोर लगाइ रहे हैं कै, बालक कौ संपूर्न बिकास करिबे के काजैं पढ़ाई-लिखाई के संग- संग और हू भौतु सी गतिबिधि भौतु जरूरी हैं। जिनमें खेलकूद जैसी गतिबिधि की मुख्य भूमिका मानी जायजा बातै हमारे पुरिखा तौ हजारेंन बर्ष पहलेंई समझतेे।क्रिकेट के नाम ते गेंद कौ खेल, दुनिया के सब देसन की नाक को सबाल बन्नौ भयौ है। आज हम बड़े गर्व के संग छाती ठोकि कें कह सकें कै, जा गेंद के खेल के गुरु हम बुजबासी रहे हैं। फिर खेल बिकास के नाम पै नकल करिबे बारे बिकासीन्नें हमतेई सीख्यौ है।

गेंद कौ खेल आज ते कोई पाँच हजार वर्ष (5000) पहलें ब्रज में स्वयं भगवान श्री कृष्णा नें स्थापित कियौ, भगवान श्री कृष्ण नें तीन वर्ष की उम्र ते लैकै ,अपनी एक सौ बीस वर्ष की उम्र तक, समाज के हर वर्ग और हर आयु वर्ग के काजैं काम कियौ। अपनी बाल मंडली, ग्वाल-बालन में घुल-मिलिबे के काजें गेंद को खेल शुरू कियौ ,हैसकै ब्रज में बा समै और हू खेल रहे होंय। हम अपने बचपन में छुपन छुपाई,आँख मिंचोंनी, किलकिल कांटी, कुर्रा जमाल साईं,कैऊ तरै के खेल खेलौ करते, पर भगवान श्री कृष्ण की खुसी गेंद के ही खेल में रही। भगवान श्रीकृष्ण के सखा छोटी-बड़ी सबै जातिन के घरानेन ते आमते?। अपने सब सखान्नें गेंद के खेल में इकट्ठे करिकें, ऊँच-नीच जाति-पाँति की भेदभाव मिटाय,समाज में प्रेम और सद्भाव स्थापित करिबौ बिनकी गेंद की बिसेसता रही।बाबा सूरदास नें हूं अपने एक पद में लिख्यौ है, 'खेलत में को, का कौ सैंया। ' जोगेश्वर श्रीकृष्ण नें गेंद कूँ एक कहानी ते जोरि कें, जा खेल की सबरी दुनिया दीबानी कर दई। एक दिना जमुना की पारि पै खेलत भये, भगवान श्री कृष्ण नें गेंद में बल्ला ऐसौ दियौ,गेंद जमुना में तैरि गई। लोकसाहित्यकारन्नें लिख्यौ है, 'मारयौ टोल गेंद गई दह में 'इतने तेई काम नाँय चल्यौ, बा गेंदै निकारिबे के काजें बालकृष्ण हूं जमुना में कूदि परे। दह कौ मतलब कालीदह, जमुना में बा जगै एक कारौ जहरीलौ नाग भौतु दिनांन ते रहतो,बा जगै कौ नाम ही कालीदह परि गयौ। आज हू बु जगै कालीदह के नाम ते जानी जाय। नाग के व्हाँ रहबे ते, आस-पास जमुना कौ पानी जहरीलौ है गयौ,बा पानी ते प्यास बुझाइबे बारे पशु-पक्षी अपनी जान ते हाथ धोइबे लगे। जमुना में श्रीकृष्ण के कूदिबे की खबर सुनिकें, गेमते-बिलखते बाबा नंद और जशोदा के संग जमुना की पारि पै सबरौ गाम खिच्यौ चल्यौ आयौ।

परि जा बातै को जानें ? लीलाधारी भगवान श्री कृष्ण की तौ जि एक पंथ पै दोइ काज करिबे की योजना चलि रही। कालिया नाग कौ इंतजाम करिबे के संग-संग,जब तक धरती घूमें

धरती पै गेंद के खेल की स्थापना करनी हती। थोरी सी देर पीछें ही सबके चहेते बालकृष्ण कूँ जमुना ते बाहर निकरतौ देखिकें सबन कौ मुख मंडल कमल सौ खिलि गयौ। आज धरती पै तहलका मचाइबे बारौ गेंद कौ खेल, दुनिया भरि में कैऊ तरै ते खेल्यौ जाइ,गेंदबल्ला जाते क्रिकेट कहें बौली बौल, फुटबाल, बास्केटबॉल, टेनिस कैसैऊ खेलौ खेल तौ गेंद कौ ही है।हारते ब्रज में एक कहावत है,हाथी डोलै गाम-गाम, जा कौ हाथी बाकौ नाम। 'परि दुख एक ही बात कौ है, आज हम अपने आपे और अपने बल कूँ बुलाइ बैठे हैं, बाकौ लाभ कोई और ही उठाइ रह्यौ है,जो कबऊ हमारे चेला हते आज हम बिनमें अपने गुरु को दर्सन करि रहे हैं।

देवी प्रसाद गौड़
बी -50 मोतीकुंज एक्सटेंशन मथुरा

पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय बीएसएफ डाबला में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया संविधान दिवस

संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठ कर विद्यार्थियों को दिलाया लोकतांत्रिक मूल्यों का संदेश



जैसलमेर। पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय बीएसएफ डाबला में 26 नवंबर को संविधान दिवस उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय संविधान के महत्व, लोकतांत्रिक मूल्यों, मौलिक अधिकारों तथा नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रभारी प्राचार्य श्री महेंद्र कुमार एवं विद्यालय के अन्य शिक्षकों द्वारा भारतीय संविधान के शिल्पकार डॉ. भीमराव अंबेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती मैरी पी. मैथ्यूज ने किया।

इस अवसर पर कक्षा 9 की छात्रा साक्षी के नेतृत्व में सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना का सामूहिक पाठ किया तथा संविधान में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समता और बंधुता के आदर्शों को आत्मसात करने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में छात्रा भविता ने संविधान दिवस के महत्व पर प्रभावशाली भाषण प्रस्तुत करते हुए भारतीय संविधान की विशेषताओं एवं नागरिक जीवन में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। वहीं सैनी सर ने अपने संबोधन में संवैधानिक आदर्शों, मौलिक अधिकारों और मौलिक कर्तव्यों की विस्तारपूर्वक व्याख्या करते हुए विद्यार्थियों को एक जागरूक, जिम्मेदार एवं संवेदनशील नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए चित्रकला गतिविधि का भी आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मकता के माध्यम से संविधान, लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता से जुड़े विचारों को रंगों के माध्यम से अभिव्यक्त किया।



मोहसिन खान को जबलपुर में मिला बैस्ट सिंगर अवार्ड

मंडला--गोल्डन म्युजिकल वेव्स के द्वारा शहीद स्मारक,जबलपुर में आयोजित सिंगिंग प्रोग्राम जिसका संयोजन रिंकू बग्घा जी व आनंद साहू जी के द्वारा किया गया था, उसमें भाग लेने वाले सभी 26 सिंगर्स में जाने-माने सिंगर मोहसिन खान ने मर्डर-2 का गाना बेहतरीन तरीके से गाकर बैस्ट सिंगर की ट्रोफी व 1100 रुपए नगद प्राप्त कर शानदार उपलब्धि हासिल की।

उनके साथ ही संयुक्त रूप से यह अवार्ड नम्रता जैन जी व योगेश उपाध्याय जी को भी प्रदान किया गया।यह अवार्ड तीनों को डाबर इंडिया कंपनी के जबलपुर मैनेजर के सौजन्य से दिया गया। निर्णायक का दायित्व संगीत गुरू शरद वजीरा सर ने स्वयं सँभाला था। उनके द्वारा किया गया यह चयन बहुत मायने रखता है।

हमारा संविधान हमारी शक्ति है-प्रो शरद नारायण खरे



मंडला-संविधान दिवस 26 नवम्बर के अवसर पर नेहरू युवा केंद्र के तत्वाधान में जिला प्रशासन के मार्गदर्शन में अखिल भारतीय साहित्य परिषद के सामंजस्य में 'संविधान दिवस' के महत्व व गरिमा पर केंद्रित आयोजन शासकीय जगन्नाथ मुन्नालाल चौधरी महिला महाविद्यालय के सभागार में सेवानिवृत्त प्राचार्य प्रो.(डॉ)शरद नारायण खरे के मुख्य आतिथ्य व पर्यावरणविद राजेश क्षत्री के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। संयोजन नेहरु युवा केंद्र के समन्वयक सोलंकी जी ने किया. महाविद्यालय के प्राचार्य डा एसपी धूमकेती की विशेष उपस्थिति रही। इस अवसर पर शिक्षाविद प्रो शरद नारायण खरे ने संविधान के महत्व व गुणधर्मिता पर प्रकाश डालते हुए संविधान की शक्ति को चित्रित किया। इस अवसर पर उनका पाँच दशकीय उल्लेखनीय साहित्य सेवा के मद्देनजर उन्हें आयोजकों द्वारा गरिमापूर्वक बुके व मोमेंटो भेंटकर सम्मानित किया गया।

भगवान् महावीर और वर्तमान जीवन के वातायन

चौदह सौ चालीस मिनट एक दिन-रात में होते हैं। इनमें से अधिकतर हम बेकार की बातों या कामों में यों ही खो देते हैं। हम थोड़ा विवेक रखकर क्या इनमें से कुछ अपने अन्तर के लिए उपयोग में नहीं ला सकते हैं? किसी ने कहा मैं अपनी शरीर - चेतना को भगवान् महावीर के दीक्षाकालीन परिपार्श्व में ले गया ।

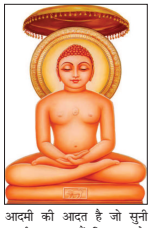

उसने देखा- महावीर घर छोड़कर अकेले जा रहे हैं । उनके शरीर पर केवल एक वस्त्र है , वही अधोवस्त्र और वही उत्तरीय । फिर आभूषणों की बात ही क्या ? वे शरीर -अलंकरण को छोड़ चुके हैं । पैरों में जूते नहीं हैं । भूमि और आकाश के साथ तादात्म्य होने में बाधा नहीं आ रही है । भोजन के लिए कोई पात्र नहीं हैं । पैसे का प्रश्न ही नहीं हैं । वे अकेले चले जा रहे हैं । सचमुच अकेले । आम आदमी की आदत है जो सुनी सुनाई वह बात हैं कि तन को, मल-मल कर धोये पर मन का मैल न धोये । रगड़-रगड़ कर महंगी साबुन से नहाये पर बैल के बैल रहे। विसर्जन की साधना प्रारम्भ हो चुकी हैं - देह के ममत्व का विसर्जन, संस्कारों का विसर्जन, विचारों का विसर्जन और उपकरण का विसर्जन आदि - आदि । यह शरीर धर्म का आद्य साधन है । शरीर ही धर्म का आद्य साधन हैं , वह शरीर धर्म का आद्य साधन हैं जो आसक्ति के नागपाश से मुक्त हो चुका हैं । वह यात्रा समस्वरता में सम्पन्न हो गई । भगवान् के शरीर पर वह दिव्य दुष्य उपेक्षा के दिन बिता रहा था । न भगवान् उसका परिकर्म कर रहे थे और न वह उनकी शोभा बढ़ा रहा था । किसी को बुरा-भला कहने से पहले बस! खुद को अच्छा बना लिया जाए तो निश्चित ही दुनिया से एक बुरा इन्सान कम हो जाएगा । साधना का दूसरा वर्ष और पहला मास । भगवान् दक्षिण वाचाला से उत्तर वाचाला को जा रहे थे । दोनों सन्निवेशों के बीच में दो नदियां बह रही थी - सुवर्णबालुका और रुप्यबालुका । सुवर्णबालुका के किनारे पर कंटीली झाड़ियां थी । भगवान् उनके पास होकर गुजर रहे थे । हम मस्तिष्क को निरंतर बोधपूर्ण रखने का भी काम करें । वह जब हम बोधपूर्ण होते हैं तो स्वतः ही गलत कार्यों से विमुख हो जाते हैं। हमारे मुख से निकले शब्द शिष्ट व मर्यादित होते हैं।वर्तमान पल में रहते हुए हम जीवन का गहरा आनंद ले । इससे अधिक श्रेष्ठ और सुंदर जीवन और क्या हो सकता है। यही तो जीवन की पूर्णता है। भगवान् के शरीर पर पड़ा हुआ वस्त्र कांटों में उलझ गया । भगवान् रुके नहीं , वह शरीर से उतर नीचे गिर गया । भगवान् ने उस पर एक दृष्टि डाली और उनके चरण आगे बढ़ गए । हम जो भोजन करते हैं उससे शरीर का पोषण तो होता ही है भावनाओं और विचारों का भी निर्माण होता है। इसीलिए तो कहा गया है कि जब हम हड़बड़ में अथवा क्रोधित अवस्था में या फोन, टी.वी. आदि - आदि देखते-सुनते खाना खाते हैं तब वह भोजन तन का पोषण नहीं मन का विष बन जाता है और हमें पता ही नहीं लगता है। यह शास्त्रोक्त कथन है कि भोजन पकाने वाले व खिलाने वाले की मानसिक दृष्टि जितनी शुद्ध होगी उतने ही खाने वाले का मन व विचार शांत व विशुद्ध होंगे । अतः डॉक्टरों आदि के द्वारा सलाह दी जाती है कि भोजन करते वक्त मौन में रहा जाए तथा प्रकृति व खाना पकाने वाली मां या मां स्वरूपा के प्रति आभार व्यक्त किया जाए। भोजन को आदर सहित ग्रहण किया जाए। भोजन को आदर देना आत्मा को आदर देना है इसे कभी न भूला जाए। भगवान् के पास अपना बताने के लिए केवल शरीर था और वास्तव में उनका अपना था चैतन्य । वह चैतन्य जिसके दोनों पार्श्वों में निरन्तर प्रवाहित हो रहे हैं दो निर्झर । एक का नाम है आनन्द और दूसरे का नाम है वीर्य । पहले शरीर के साथ प्रेम का सम्बन्ध था , अब उसके साथ विनिमय का सम्बन्ध हैं । पहले उधार का व्यापार चल रहा था , अब नकद का व्यापार चल रहा हैं । भगवान् का अधिकांश समय ध्यान में बीतता हैं । वे बहुत कम खाते हैं, उतना - सा खाते हैं जिससे यह गाड़ी चलती रहें । शरीर के साथ उनके सम्बन्ध बहुत स्वस्थ थे । वे उसे आवश्यक पोषण देते थे और वह उन्हें आवश्यक शक्ति देता था । वे उसे अनावश्यक पोषण नहीं देते थे और वह उन्हें अनावश्यक (विकारक, उत्तेजक या उन्मादक आदि - आदि) शक्ति नहीं देता था । मन है कि मानता ही नहीं हैं । विचारों का तांता सा लगा रहता है। विधायक भी और निषेधक भी विचार आते हैं। विधायक चिंतन से शांति और आनंद मिलती हैं । निषेधक चिंतन से मन में विषाद का घेरा भर जाता हैं । अशांति अपना डेरा जमा लेती है । आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने सुझाया कि हम हरदम सजग रहें। हमारे ज्यों ही निषेधक भाव कदम बढ़ाये तो तुरंत श्वास प्रेक्षा करने लग जाये। ये विचार मेरे नहीं है ऐसी अनुप्रेक्षा करें। वह उस विचार को वहीं विराम दे दे। शुभ चिंतन की ओर अविराम मुड़ जाएं ।



प्रदीप छाजेड़
(बोरावड़)